IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

जिला सिरमौर के गिरीपार क्षेत्र के प्रमुख त्यौहारों का वर्णन

Amritanjali Sharma

Phd Scholar In Music

Baru Sahib University H.P

भूमिका :–

अकसर कहा जाता है कि प्रकृति से सुन्दर कुछ भी नहीं होता है और भगवान ने सिरमौर के क्षेत्र को प्रकृति के इन्ही खूबसूरत नजारों से नवाजा है। यह क्षेत्र आधुनिकता के इस दौर में भी अपनी लोक संस्कृति तथा लोक संगीत को यथावत संजोए हुए है और यही विशेषताएं यहां की खूबसूरती को चार चांद लगाती है। वर्ष भर चलने वाले अनेको त्यौहार व मेलें जिनमें लोक संस्कृति व लोक संगीत का संगम देखने को मिलता है का वर्णन अपने आप में अतुलनीय है। सिरमौर जिले को गिरीआर क्षेत्र और गिरीपार क्षेत्र में बांटा गया है। जिले के गिरीपार क्षेत्र (ऊपरी क्षेत्र) की जलवायु सर्दियों में अधिक ठण्डी होती है। यहां सर्दियों में बर्फ पड़ती है। सिरमौर की सबसे उंची चोटी चूड़धार प्रायः सारा वर्ष बर्फ से ढकी रहती है। सिरमौर का गिरीआर क्षेत्र (निचला क्षेत्र) ऊपरी क्षेत्र की अपेक्षा उष्ण है। इस जिले में लगभग 125 मिलीमीटर औसतन वर्षा होती है। इस क्षेत्र में 2553 मीटर ऊँचाई तक की श्रृंखलाएं है। अधिकतर क्षेत्र उपत्यकाओं तथा पर्वत श्रृंखलाओं से मिलकर बना है। जिला सिरमौर का 48578 वर्ग हैक्टेयर भू–भाग वनों से घिरा है, जिसमें अनेक प्रकार की उपयोगी वनस्पतियां पाई जाती है।

त्यौहारों एवं मेलों में धार्मिक एवं सामाजिक मान्यताएं लोक परम्पराएं एवं लोक विश्वास विद्यमान है। ये सामाजिक एवं सांस्कृतिक एकता के प्रतीक हैं। इनके द्वारा ही सिरमौरी संस्कृति फूली–फली एवं सजीव है। इन त्यौहारों एवं मलों ने जन–जीवन को एक सूत्र में पिरोया हुआ है। उत्सव, त्यौहार, सिरमौर की समृद्ध परम्परा के प्रतीक है। सिरमौर में प्रत्येक मास कोई न कोई त्यौहार मनाया जाता है। वर्ष भर मनाए जाने वाले त्यौहारों और मेलों का वर्णन निम्न प्रकार से है:–

चैत्र मास का त्यौहार :–

हिन्दू पद्धति के अनुसार नए वर्ष की शुरूआत चैत्र मास से मानी जाती है। चैत्र नवरात्रों से यहाँ वर्षारम्भ माना जाता है। लोक विश्वास है कि चैत्र मास के नवरात्रों से आदि काल में सृष्टि प्रक्रिया प्रारम्भ हुई थी। वर्ष की मंगल कामना के लिए सिरमौर में कुछ क्षत्रे ों में ढाकी या तूरी लोग घर–घर जाकर अपने वाद्यों के साथ मंगलगान करते है। यह क्रम चैत्र मास में पूरे माह चलता रहता है। चैत्र मास की दुर्गा अष्टमी को सिरमौर में एक पर्व मनाया जाता है, जिसे 'चोईचो री आठों' कहा जाता है। ऐसी लोक–धारणा है कि इस दिन हनुमान 'कालीमाता' की सिद्धि करने के बाद राम–लक्ष्मण को पाताल से रावण के कब्जे से छुड़ा कर ले आए थे। इस दिन हनुमान तथा कालीमाता की पूजा की जाती है। इस त्यौहार में कई पकवान बनाए जाते है, जिनमें बिजुआ, उलोडले, सिड़कू, पटांडे आदि प्रमुख स्थानीय व्यंजन है। चैत्र मास के शुक्ल पक्ष की नवमी तिथि को 'राम नवमी' का त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन राम को विष्णु अवतार मान कर उनकी पूजा की जाती है। बिषु त्यौहार :–

बैसाख मास के त्यौहारों में 'बिशु' त्यौहार प्रमुख है। 'बिशु' शब्द के साथ कई किवंदन्तियां व लोक–धारणाएं जुड़ी हुई है। 'बिशु' शब्द का सम्बन्ध बैसाखी से तथा 'बिशु' नाम के देवता से है। यह त्यौहार सिरमौर के ऊपरी क्षेत्र 'गिरीपार ' में ही विशेष रूप से मनाया जाता है। वहां पूरे मास त्यौहार चलता रहता है। बिशु के आने से एक सप्ताह पूर्व ही गांव की कुँआरियां सांझे आंगन में इकट्ठी होकर मंगल गीत गाकर 'बिशु' का स्वागत करती है। इस दिन झूलों के लिए घास के रस्से बनाए जाते हैं और 'बिशु' का संगीत बजाया जाता है, लोग नाचते व गाते हैं। इसके अतिरिक्त कुछ जगहों पर गांव में देवता के नाम एक बकरे की बलि भी दी जाती है और बकरे का मांस समान रूप से गांव के प्रत्येक घर में बांटा जाता है, जिसे 'बिशुड़ी की गुल्टी' कहते हैं। इसके उपरान्त अनेक स्थानों पर छोटे तथा बड़े 'बिशु' के मेलों का क्रम चलता है जो स्थानीय देवता की प्रसन्नता के लिए आयोजित किए जाते है। बैसाख मास की संक्रान्ति को सभी लोग देवालयों में जाकर पूजा–अर्चना करते हैं तथा सांयकाल स्थानीय उतम भोजन बनाकर खाते हैं। जेठो रो मोउलो :–

यह त्यौहार ज्येष्ठ मास में मनाया जाता है। ज्येष्ठ मास में पेड़–पौधों पर नई कोंपलें (मोऊल) आती हैं। पहाड़ों का सूखापन जाने लगता है और हरियाली फैलनें लगती है। सिरमौर के अधिकांश लोग पशुपालक हैं उनका जीवन कृषि पर आश्रित है। लोग पशुओं के लिए हरे चारे और प्रकृति की सुन्दर हरियाली देखकर झूम उठते हैं, जिसकी प्रसन्नता में यह त्यौहार मनाया जाता है। खीर, असकली, पटाण्डे, सिड़कू, शहद आदि इस त्यौहार के मुख्य पकवान हैं।

हरियालटी :–

हरियाली से बिगड़ कर ही 'हरियालटी' शब्द बना है। यह त्यौहार आषाढ़ मास में संक्रान्ति से प्रारम्भ होता है। इस समय चारों तरफ हरियाली होती है। मक्की व मण्डुए की गुड़ाई, निंदाई का कार्य समाप्त हो जाता है। जन साधारण को कठिन परिश्रम के उपरान्त राहत मिलती है। ऐसे समय में दो दिन तक यह त्यौहार मनाया जाता है। लोग अपनी विवाहित बेटियों व बहनों के घरों में गुड और आटा जिसे 'हरियालटी रा बान्डा' कहते हैं, ले जाते है। इन दिनों ईष्ट देव की पूजा की जाती है। देवता के प्रागंण में गांव के लोग इकठ्ठे होकर नाचते–गाते हैं। यह त्यौहार सिरमौर के गिरीपार क्षेत्र में मुख्यतः मनाया जाता है।

षौणयाली :–

'शौणयाली' शब्द श्रावण से बिगड़ कर बना है, जिसका शाब्दिक अर्थ श्रावण मास में मनाया जाने वाला त्यौहार है। यह त्यौहार हिन्दी कैलेन्डर के अनुसार बीस गते श्रावण को मनाया जाता है। श्रावण मास में खेतों में खड़ी भरपूर फसलें अपने यौवन पर होती है, एसे` समय में कोई भी प्राकृतिक आपदा तेज़ हवा, भारी वर्षा आदि फसलों को भारी हानि पहुँचा सकती है। अतः इस अवसर पर लोग अपनी कुल देवी या देवता की प्रसन्नता के लिए मर्द के हाथों से बना हुआ 'रोट' (मर्द के हाथों बनी मोटी गेंहू की रोटी) गुड़ तथा घी के साथ चढ़ाते है और अपनी फसल की अधिक उपज तथा रक्षा करने की कामना करते हैं। गांव के सभी लोग किसी मकान या सांझे आंगन में इकट्ठे होकर नाचते गाते हैं। यह त्यौहार पाँवटा तहसील के ऊपरी हिस्सों में तथा संगडाह और राजगढ़ क्षेत्र में अधिक मनाया जाता है। श्रावण मास में रक्षाबन्धन पर्व भी सिरमौर जिले में मनाया जाता है जिसके मनाने का ढंग दूसरे इलाकों से मिलता–जुलता है।

कृष्ण–जन्माष्टमी :–

यह त्यौहार भाद्रपद कृष्ण पक्ष की 'अष्टमी' तिथि को मनाया जाता है। वैष्णव धर्मावलम्बी इस दिन विष्णु के अवतार श्री कृष्ण की प्रसन्नता के लिए दिन में व्रत रखकर सांयकाल उनकी पूजा–अर्चना करते है। सांयकाल पूजा के बाद फलाहार करके दूसरे दिन प्रातः व्रत का उद्यापन करते है। पांचोई :–

सिरमौर में भाद्रपद की अमावस्या के बाद तीज को यह त्यौहार मनाया जाता है। इस दिन भगवान शिव के अंशावतार माने जाने वाले 'महासु देवता' की पूजा की जाती है। कई गांवों से लोग महासू देवता के प्रमुख मन्दिरों में इकट्ठे होते हैं। वहाँ रात भर 'महासू री कांकरी' (स्तुति परक गीत) गाई जाती है। वहां बड़े अनोखे दृश्य देखने को मिलते है। कई लोगों में देवता प्रकट हो जाते हैं। जो अंगारे खाने, जलती आग में बैठने जैसे अनोखे करतब करते दिखाई पड़ते हैं। महासू देवता किसी व्यक्ति में प्रविष्ट होकर लोगों की फरियाद सुनते हैं। जोशीली देव गाथाएं गाकर

महासू देवता को प्रकट किया जाता है। जिस गांव में महासू देवता को मनाने वाले रहते है उस गांव में भी 'पांचोई' मनाई जाती है, लेकिन कुछ विशिष्ट स्थानों पर दूर–दूर से हजारों की संख्या में लोग आते हैं। इस त्यौहार का विशेष पकवान 'पिनुए' (ढ़िडकी) और 'उलोडलें' हैं। सिरमौर में द्राबिल, शिल्ला, टटियाणा तथा नघते ा की पांचोई मुख्य रूप से प्रसिद्ध हैं। आषोऊजो री आठोंई :–

यह त्यौहार अश्विन (असौज) मास की दुर्गा अष्टमी को मनाया जाता है। इसका सम्बन्ध एक पौराणिक घटना से है, जिसके अनुसार सीता अपहरण के उपरान्त राम और रावण के युद्ध के समय रावण का भाई अहिरावण, राम–लक्ष्मण का अपहरण करके काली माता के लिए उनकी बलि चढ़ाने पाताल लोक ले गया था। उनकी मुक्ति के लिए हनुमान ने काली माता की सिद्धि की तथा राम और लक्ष्मण की बलि लेने के स्थान पर अहिरावण की बलि लेने का वरदान मांगा और उसे वचन दिया कि मृत्यु लोक में जाकर वह उसे बलि देगा। चैत्र मास की दुर्गा अष्टमी को वो लोग मृत्यु लोक में आए थे तथा असौज मास की दुर्गा अष्टमी को हनुमान ने देवी की प्रसन्नता के लिए बकरे की बलि दी थी। इसी कारण इस त्यौहार में लोग अभी भी बकरे की बलि देते हैं और नाचने लगते हैं। कुछ लोग दुर्गा अष्टमी का व्रत रखते है ं तथा शान्ति पूजा करते है। कुछ स्थानों पर स्त्रियां जंगली फूलों की छोटी–छोटी पुतलियां बनाती हैं जिन्हें 'दराड़ी' कहा जाता है। इन्हें प्रातः काल किसी टोकरी में या थाली में सजाकर रखा जाता है। सांयकाल स्त्रियां इन्हे पानी की बावड़ी के पास मिलकर ले जाती है और वहां दाल, दही औश्र चावल का भोग लगाकर उन्हे वही पानी के पास छोड़ देती है। उस खाद्य सामग्री को वहां उपस्थित स्त्रियां तथा बच्चे आपस में बांट कर खाते है। इस अवसर पर वहां गीत भी गाए जाते है।

विजय दषमी :–

विजय दशमी का त्यौहार भी सिरमौर में बडी धूमधाम से मनाया जाता है। इस दिन राम की पूजा की जाती है। प्रातः काल लोग अपने–अपने घरों में लिपाई करके बन्दूक, तलवार आदि शस्त्रों को सुसज्जित करके स्वच्छ स्थान पर रखकर पूजते हैं। बन्दूके और पटाखे भी चलाते है, जिन्हे चलाना मांगलिक माना जाता है। इस त्यौहार को बुराई पर अच्छाई की विजय का प्रतीक माना जाता है। गरबड़े :–

आश्विन मास की पूर्णिमा (शरद पूर्णिमा) को यह त्यौहार (सिरमौर जनपद में मनाया जाता है। कृषक प्रातः काल अपने प्रमुख धन–पशुओं के सींगो को घी व तेल से चमकाकर उनके गले में फूलमालाएं बांधते हैं। प्रातः काल गऊशाला के बाहर गोबर की मूर्ति बनाई जाती है, जिसे 'ग्रामणी' कहा जाता है। ग्राम की अधिष्ठात्री देवी मानकर पुष्प, धूप, दाल, दही, चावल आदि से उसकी पूजा की जाती है तथा पशुओं की रक्षा के लिए मंगल कामना की जाती है। इस दिन पशुओं को मारना–पीटना वर्जित है। कुछ स्थानों सैनधार तथा धारटीधार में सांयकाल को गांव की स्त्रियां एकत्रित होकर घर–घर जाकर मिट्टी के कटोरों में सरसों का तेल डालकर और उसे जला कर हाथ में लेकर घुमती है, जिन्हे गरबड़े कहा जाता है। इस अवसर पर वे गीत भी गाती है। कुछ स्थानों पर इस त्यौहार को 'गरौणे' भी कहा जाता है। मुख्यतः यह पशुओं से सम्बन्धित त्यौहार है। नई दीवाली तथा बूढ़ी दीवाली :–

कार्तिक मास की अमावस्या को नई दीवाली मनाई जाती है। सिरमौर के शिलाई क्षत्रे को छोडकर शेष सारे सिरमौर में यह त्यौहार धूमधाम से मनाया जाता है। इस त्यौहार में सांयकाल गांव के लोग मिलकर किसी स्थान पर लकड़ी का बडा ढेर लगाते हैं। उस ढरे को अखरोट, खीलों आदि से आग लगाकर घास अथवा चीड़ के 'हुशू' (चीड़ का फल जिसमें बीज लगते है) को लताओं में बांधकर आग लगाकर घुमाते है। यह रस्म सारे इलाके में एक साथ की जाती है। जिससे सारा क्षेत्र जगमग हो उठता है। घर आकर सभी लोग अपने–अपने घरों की छतों या आंगन में आग के छोटे–छोटे ढेर जलाते है, जिन्हे 'बरलाज' कहा जाता है। 'बरलाज' शब्द 'बलिराज' शब्द से बिगड़कर बना है। इसका सम्बन्ध एक पौराणिक घटना से है। इस बरलाज की आग को "रूदियाला" भी कहा जाता है। इसके बाद रात्रि को लक्ष्मी पूजन भी किया जाता है। दूसरे दिन प्रातः काल कृषक अपने कृषि उपकरणों की पूजा करते हैं, जिसमें हल, ओखली, जुआ आदि शामिल होते है। गिरीपार के क्षेत्रों में इस दिन से बूढा नृत्य प्रारम्भ किया जाता है। हरिजन जाति के लोग यह बूढ़ा नृत्य करते हैं। इस अवसर पर वीर रस पूण वीरों की गाथाएं गायी जाती है। यह क्रम कई दिनों तक चलता रहता है। इस नृत्य में भाग लेने वाले कई कलाकार होते है जो विशेष प्रकार की सफेद रंग के चोले पहनते हैं और सिर पर पगड़ी लगाते है। लोग बड़े उत्साह के साथ इस उत्सव में भाग लेते है। ये लोक गायक हुडक (विशेष प्रकार का डमरू की तरह का वाद्य) के साथ वीर रसात्मक तथा हास्य व्यंग्यात्मक गीत गाते हैं। नर्तकों को ग्रामवासी अच्छा भोजन तथा धन देकर उत्साहवर्धन करते हैं। इस अवसर पर अनके प्रकार के स्वादिष्ट व्यंजन बनाए जाते हैं। दीवाली के बाद प्रतिमदा अथवा दूज को प्रत्येक दामाद अपने सास–ससुर को खील, पताशों व अखरोट आदि की भेंट लेकर अपने ससुराल जाता है। दीवाली के बाद मेहमान नवाजी का क्रम भी प्रारम्भ हो जाता है जो कई दिनों तक चलता रहता है। इन दिनों किसान अपने काम से फुर्सत में हाते` है। अतः इन दिनों आमोद–प्रमोद में ही व्यस्त रहते हैं। सारे वातावरण में अजीब मस्ती छाई रहती है।

"नई दीवाली" के ठीक एक मास बाद 'बूढ़ी दीवाली' मनाई जाती है। गिरीपार के क्षत्रे में नई दीवाली के स्थान पर 'बूढ़ी दीवाली' का ही अधिक प्रचलन है। इसे 'मशराली' भी कहा जाता है। "स्थानीय लोगों के अनुसार इसका मुख्य कारण यह है कि श्रीराम जी के 14 वर्षो बाद अयोध्या लौटने की सूचना पहाड़ी व दुर्गम क्षेत्रों में देरी से मिली अतः

दीवाली के ठीक एक माह बाद अमावस को यह पर्व बूढ़ी दीवाली के नाम से धूमधाम से मनाया जाता है। इसका दूसरा कारण यह है कि शीताधिक्य से इस क्षेत्रों में फसल जल्दी पक कर तैयार नहीं होती। देरी से फसल पकने के कारण नई दीवाली के स्थान पर बूढ़ी दीवाली का प्रचलन है"। दूसरे क्षेत्रों में जहां पर लोग दिवाली किसी कारण नहीं मना सके हों तो वहां पर "दीपमाला" आदि दिवाली की पूरी रस्में सम्पन्न की जाती है। लोग इस पर्व पर अपने इष्ट देव को 'मूड़ा' (भुना हुआ अनाज) अखरोट, खील–पताशे आदि अर्पण करते हैं तथा इष्ट मित्रों को भी बाँटते हैं। गिरीपार के क्षेत्रों में यह त्यौहार पूरे एक सप्ताह चलता है। बूढ़ी दीवाली से एक सप्ताह पूर्व गांव की 'ध्यैणे' (अविवाहित कन्याए) गांव के सांझे आंगन में एकत्रित होकर बूढ़ी दीवाली के शुभारम्भ पर मंगल गीत गाती है। इन दिनों 'राजा' (नृत्य गीत), नाटक स्वांग आदि मनोरंजक कार्यक्रमों का आयोजन होता है। इस दिन प्रत्येक विवाहिता अपने पिता के घर आती है। यदि वह किसी कारणवश न आ सके तो उसे इस त्यौहार का हिस्सा उसके ससुराल में पहुंचा दिया जाता है, जिसे 'भिंराव' (भिंवरी कर हिस्सा) कहते हैं। लगभग सभी प्रकार के लोक नृत्य और लोक गीत इस त्यौहार में देखे–सुने जा सकते है। इस त्यौहार का सम्बध एक लोक–कथा से भी है, जिसे 'भिवरी' कहा जाता है। इस अवसर पर भिंवरी का गीत प्रमुख रूप से गाया जाता है।

माघी त्यौहार :–

इस त्यौहार का सिरमौर में अपना विशेष महत्व है। माघ को पवित्र एवं धार्मिक मास माना जाता है। यह त्यौहार 27 गते पौष से प्रारम्भ होता है। माध पवित्र मास माने जाने से 27 गते पौष में ही सभी अमीर गरीब लोग 'माघी' त्यौहार के लिए पाले गए बकरों को काटते है। इस बकरे के मास को हल्दी लगाकर सुरक्षित स्थान पर (ठण्डे स्थान पर) रख दिया जाता है, जो कई दिनों तक उपयोग में लाया जाता है। आवश्यकता अनुसार इसे यथा अवसर बनाते रहते हैं। पूरे (माघ) मास में लोग मांस व मदिरा का भरपूर प्रयोग करते हैं। प्रत्येक रात्रि को नाच–गाने का कार्यक्रम होता है। भाई अपनी बहन को इस त्यौहार का हिस्सा जरूर पहुँचाता है। महीने भर खूब मेहमान नवाजी चलती है। यह त्यौहार गिरीपार क्षेत्र में ही विशेष रूप से मनाया जाता है। शीताधिक्य से कृषि कार्य रूक जाता है। अतः लोग इस पर्व में अपना समय खाने–पीने और मनोरंजन में ही व्यतीत करते हैं। व्यस्त तथा कठोर जीवन से लोगों को कुछ समय के लिए राहत मिलती है। शीत प्रधान क्षेत्र होने से इस क्षेत्र के लोग सर्दी आने से पूर्व ही अपने तथा पशुओं के लिए खाद्य सामग्री एकत्रित कर लेते हैं। इस त्यौहार के प्रथम दिन को 'खुरचान्टी' या 'खड़यान्टी' कहा जाता है। इस दिन असकली नाम का व्यंजन बनाया जाता है। जो खुरच कर बनता है। गेंहू, चावल, कोदा या उड़द के मिश्रित आटे के घोल को तवे की तरह बनाए गए पत्थर (असकली) पर जिसमें छोटे–छोटे गोल गड़ढे होते है उसे चुल्हे पर गर्म करके ढक कर बनाया जाता है। दूसरे दिन को 'डिमलान्टी' कहते हैं इस दिन गुड़ का हलवा बनाया जाता है। तीसरे दिन को 'होथका' कहा जाता है इसी दिन प्रत्येक घर में पाले गए बकरे या खड़्डू को काटा जाता है, काटने से पूर्व इसे अपने इष्ट देव को समर्पित किया जाता है। प्रत्येक घर में 'पोली' (गेंहू के आटे की विशेष प्रकार की चपाती) पकाई जाती है। मकर संक्राति को सिरमौर में माघ का साजा कहा जाता है। इस दिन सभी लोग मन्दिरों में पूजा–अर्चना करते है, तथा चावल, उड़द और नमक आदि (खिचड़ी) दक्षिणा के साथ ब्राह्माणों को दान करते हैं। खोड़ा त्यौहार :–

यह त्यौहार माघी त्यौहार का ही एक अंग है। यह त्यौहार 8 गते माघ को मनाया जाता है। इस त्यौहार के मनाने का ढंग भी माघी त्यौहार की तरह ही है। खोड़ा त्यौहार के सम्बन्ध में लोक–धारणा है कि खोड़े में (घर से दूर क्षेत्र) रहने वाले लोग, जो माघी त्यौहार में सम्मिलित न हो सकें उन खोड़े वालों के लिए यह त्यौहार मनाया जाता है। यह त्यौहार भी गिरीपार में ही मनाया जाता है। षिवरात्रि :–

दूसरे क्षेत्रों की तरह सिरमौर में भी फाल्गुन मास में शिवरात्रि का त्यौहार मनाया जाता है। लोक–धारणा के अनुसार इस दिन शिव तथा पार्वती का विवाह सम्पन्न हुआ था। इस दिन व्रत रखने से समस्त मनोरथ पूर्ण होते हैं। इसलिए शिव तथा पार्वती के अनुग्रह को प्राप्त करने के लिए लोग व्रत रखते हैं व सांयकाल कीर्तन आदि का आयोजन करते हैं। सांयकाल फलाहार करके दूसरे दिन प्रातः व्रत का उद्यापन किया जाता है। कई स्थानों पर भण्डारें (ऋषि लंगर) भी किए जाते हैं। इस पर्व के अवसर पर शिव के अंशावतार शिरगुल की पूजा–अर्चना भी की जाती है। होली :–

फाल्गुन मास में होली का त्यौहार भी सिरमौर में बडी़ धूमधाम से मनाया जाता है। इस त्यौहार का सम्बन्ध एक पौराणिक घटना से है। लोक धारणा है कि इस दिन हिरण्यकश्यप के आदेश से भक्त प्रहलाद को अग्नि में जलाने के प्रयास में हिरण्यकश्यप की बहन होलिका स्वयं जल कर भस्म हो गई थी और भगवान विष्णु ने नरसिंह अवतार धारण करके अत्याचारी हिरण्यकश्यप का संहार किया तथा अपने परम भक्त प्रहलाद का उद्धार किया था। इस दिन सांयकाल लोग एकत्रित होकर इस घटना के प्रतीक के रूप में लकड़ियों का ढेर जलाते हैं, जिसे होली का दहन कहा जाता है। यह त्यौहार दो दिन तक चलता है। प्रथम दिन लोग सूखे रंगो की होली खेलते हैं। व दूसरे दिन रंगों को पानी में घोलकर एक दूसरे पर छिड़कते हैं। इस पर्व पर लोग अपने समस्त परस्पर वैमनस्यों को भूल कर आपस में प्यार से गले मिलते हैं। इस पर्व पर रंगों का प्रयोग मंगलकारी माना जाता है। इन दिनों नृत्य, गीत आदि सांस्कृतिक कार्यक्रमों का आयोजन भी किया जाता है।

सारांष :–

मेलों में किसी भी समाज का धार्मिक विश्वास, सामाजिक मान्यताएं तथा सांस्कृतिक परम्पराएं नीहित रहती है। मेले प्राचीन परम्पराओं के साथ हमारे जीवन का तारतम्य जोड़ते हैं। ये हमारी सांस्कृतिक प्रदर्शनियां हैं जो जनमानस में हर्षोल्लास का संचार करते हैं। समाज को एकता के सूत्र में बांधने के साथ–साथ इन मेलों का व्यापारिक महत्व भी है। सिरमौर जनपद में समय–समय पर अनेक धार्मिक तथा सामाजिक मेलों का आयोजन होता रहता है, जिसमें कुछ मेंलो का आकार बड़ा और कुछ छोटे आकार के हैं। सभी लोग बड़े उत्साह के साथ इन मेलों में भाग लेते हैं। अपनी प्राचीन सांस्कृतिक विरासत को संजोए रखना क्षत्रे की खूबसूरती को चार चांद लगाता है।

संदर्भ ग्रन्थ सूचीः–

1- राही, डा0 ईश्वर दास 2021, सिरमौर लोक गीतों के आईने में, आरती प्रकाशन, साहित्य सदन इंदिरा नगर, लाल कुआं नैनीताल उतराखण्ड, 262402।
2- शर्मा, डा0 रूप कुमार 1991, सिरमौर दर्पण गायत्री प्रिंटर्स जालन्धर।
3- शर्मा, डा0 रूप कुमार 1994, सिरमौर का इतिहास राजनीतिक एवं सांस्कृतिक, अग्रवाल प्रिंटर्स प्रैस नाहन।